بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 15.01.16 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अल्लाह तआला अपने वलियों तथा नेकी पर क़ायम रहने वालों की संतान दर संतान एंव नस्लों की भी सुरक्षा फ़रमाता है तथा उन्हें वरदान देता है परन्तु शर्त यह है कि वह संतान एंव नस्ल भी नेकी पर स्थापित रहने वाली हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को हमें विशेष रूप से पढ़ने का प्रयास करना चाहिए उनके द्वारा ही हमारा दीन का ज्ञान भी बढ़ेगा तथा हमें तबलीग़ करने का शौक़ भी पैदा होगा, हमारे ज्ञान में बरकत भी पड़ेगी और दुनया को हम इस्लाम के झंडे तले लाने के योग्य होंगे।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला अपने वलियों तथा नेकी पर क़ायम रहने वालों की पीढ़ी दर पीढ़ी एंव नस्लों की भी सुरक्षा फ़रमाता है तथा उन्हें वरदान देता है परन्तु शर्त यह है कि वह संतान एंव नस्ल भी नेकी पर स्थापित रहने वाली हो। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इसका उदाहरण देते हुए हज़रत अली रज़ी. के बारे में फ़रमाते हैं कि देखो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अपनी रिसालत के आरम्भिक दिनों में अपने कुटुम्ब के लोगों को हक़ का पैग़ाम पहुंचाने के लिए दावत की, आपने इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया तो पूरी मज्लिस सन्नाटे में आ गई, सब चुप थे, कोई नहीं बोला। अंत में हज़रत अली रज़ी. खड़े हुए और निवेदन किया कि यद्यपि मैं आयु में सबसे छोटा हूँ, जो भी लोग इस समय उपस्थित हैं उनसे, परन्तु मैं, जो आपने फ़रमाया है इसके विषय में आपका साथ देने के लिए तय्यार हूँ तथा प्रतिज्ञा करता हूँ कि सदैव साथ दूँगा। इस प्रकार इसके बाद मक्का में विरोध चरम सीमा तक पहुंच गया, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत करनी पड़ी। उस समय हज़रत अली रज़ी. को ही अल्लाह तआला ने इस क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ दी कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ी. को अपने बिस्तर पर लिटाया और फ़रमाया कि तुम यहाँ लेटे रहो ताकि दुश्मन समझे कि मैं लेटा हुआ हूँ। उस समय हज़रत अली रज़ी. ने यह नहीं कहा कि या रसूलुल्लाह! दुश्मन बाहर घेरा डालकर खड़ा है, सुबह जब उन्हें पता चलेगा तो सम्भव है कि मेरी हत्या कर दें। अपितु बड़े संतोष पूर्वक हज़रत अली रज़ी. आपके बिस्तर पर सो गए और प्रातः जब काफ़िरों को पता चला तो उन्होंने हज़रत अली रज़ी. को बहुत मारा पीटा। परन्तु इस प्रकार उस समय तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत कर चुके थे। हज़रत अली रज़ी. की इस क़ुर्बानी ने उन्हें कितने पुरस्कार प्रदान किए बाद में। उस समय यह केवल अल्लाह तआला के संज्ञान में था कि उन्हें इस बलिदान के बदले में कितना सम्मान मिलने वाला है और न केवल हज़रत अली रज़ी. को बल्कि नेकियों पर क़ायम रहने वाली आपकी संतान को तथा नस्लों को भी अल्लाह तआला प्रतिष्ठा प्रदान करेगा। हज़रत अली पर पहला फ़ज़्ल तो अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि आपको आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दामादी का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भिन्न भिन्न अवसरों पर हज़रत अली रज़ी. के विभिन्न योगदानों के कारण बड़ी प्रशंसा फ़रमाई। एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जंग के लिए किसी स्थान पर तशरीफ़ ले जा रहे थे तो हज़रत अली को मदीने में रहने का आदेश दिया। हज़रत अली ने निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! आप मुझे महिलाओं तथा बच्चों के साथ छोड़ कर जा रहे हैं। आपने फ़रमाया- ऐ अली! क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं कि तुम्हारा स्थान मेरे संग वह हो जो हारून का मूसा के साथ था। हज़रत मूसा, हारून को पीछे छोड़कर गए थे इससे हारून का सम्मान कम नहीं हुआ था। अतः हज़रत अली रज़ी. का स्तर भी अल्लाह तआला ने इस प्रकार क़ायम फ़रमाया और फिर आप तक ही नहीं बल्कि इस्लाम में जो अधिकांशतः वली तथा सूफ़ी हुए हैं वे हज़रत अली की संतान में से ही हैं या थे और उन वलियों को भी अल्लाह तआला ने चमत्कार तथा अपना समर्थन प्रदान किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी., हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मैंने एक घटना सुनी हुई है और वह वृत्तांत यह है कि हारून रशीद ने इमाम मूसा रज़ा को किसी कारण से बन्दी

बना लिया तथा उनके हाथ और पाँव में रस्सियाँ बाँध दीं। हारून रशीद अपने महल में मज़े से आराम देने वाले गद्दों पर सोया हुआ था कि उसने सपने में देखा कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख पर क्रोध का प्रभाव है। आपने फ़रमाया कि हारून रशीद, तुम हमसे मुहब्बत का दावा करते हो, परन्तु तुम्हें लाज नहीं आती कि तुम आराम वाले गद्दों पर गहरी नींद सो रहे हो तथा हमारा बच्चा घोर गर्मी के मौसम में हाथ पाँव बन्धे हुए बन्दीग्रह के अन्दर पड़ा है। यह दृश्य देखकर हारून रशीद व्याकुल होकर उठ बैठा और बन्दी ग्रह में गया और अपने हाथ से इमाम मूसा रज़ा के हाथों और पाँव की रस्सियाँ खोलीं। उन्होंने हारून रशीद से कहा कि आप मेरे इतने विरोधी थे, अब क्या बात हुई कि स्वंय चलकर यहाँ आ गए? हारून रशीद ने अपना सपना सुनाया और कहा कि मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ, मैं वास्तविकता को न जानता था। अब देखो, हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं, देखो उस ज़माने में, और रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अली रज़ी. के ज़माने में कितना बड़ा अन्तर था। हमने कई राजाओं की संतानों को देखा है कि वे घर घर धक्के खाते फिरती हैं। दूसरी ओर देखो हज़रत अली रज़ी. की औलाद को कि इतनी पीढ़ियाँ बीतने के बाद भी ख़ुदा तआला एक राजा को सपने में डराता है तथा उनके साथ अच्छा व्यवहार करने का निर्देश देता है। यदि हज़रत अली को इस आदर सत्कार का पता होता तथा उनको प्रोक्ष का ज्ञान होता और वे केवल इस आदर सम्मान के लिए इस्लाम क़बूल करते तो उनका ईमान केवल सौदा और व्यापार रह जाता, किसी पुरस्कार के योग्य न होता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर एक वली का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि वह जलपोत में सवार था, समुद्र में तूफ़ान आ गया, सम्भव था कि जहाज़ डूब जाता, उसकी दुआ के कारण बचा लिया गया और दुआ के समय उसे इलहाम हुआ, बुज़ुर्ग को, कि तेरे कारण हमने सब को बचा लिया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- देखो ये बातें केवल वाकपटुता के कारण प्राप्त नहीं होतीं बल्कि इसके लिए परिश्रम करना पड़ता है, अल्लाह तआला के साथ दृढ़ सम्बंध रखना पड़ता है, नेकियों को जारी रखना पड़ता है जो अपने पूर्वजों की नेकियाँ हैं। अतः नेकों की संतान होना, वलियों की संतान होना, बुज़ुर्गों की नस्ल होना भी उसी समय लाभप्रद होता है जब स्वंय भी इंसान नेकियों पर क़ायम हो तथा अल्लाह तआला से सम्बंध हो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में वर्णित कई अन्य बातें भी इस समय आपके सम्मुख पेश करुंगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के साथ नमाज़ की पाबन्दी के विषय में फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नमाज़ इतनी प्यारी थी कि जब कभी बीमारी इत्यादि के कारण आप तशरीफ़ न ला सकते और घर में ही नमाज़ अदा करनी पड़ती थी तो वालिदा साहिबा अथवा घर के बच्चों को साथ मिलाकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे। केवल नमाज़ नहीं पढ़ते थे बल्कि जमाअत बनाकर नमाज़ पढ़ते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वंय एक अवसर पर जमाअत के संग नमाज़ का महत्त्व बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की यह इच्छा है कि समस्त मानव जाति को एक जान की भांति बना दे, इसका नाम जनमानस एकता है। आपने फ़रमाया कि धर्म का भी यही अर्थ होता है कि माला के मोतियों की भांति मानव एकता के धागे में सब पिरोए जाएँ। धर्म वही है जो सबको एकत्र कर दे, एक बना दे। फ़रमाया कि ये जमाअत के साथ नमाज़ें जो अदा की जाती हैं वे भी इस एकता के लिए ही हैं ताकि समस्त नमाज़ियों के समूह को एक इकाई समझा जाए तथा आपस में मिलकर खड़े होने का निर्देश इस लिए है कि जिसके पास अधिक प्रकाश है वह उसे अन्य दुर्बल व्यक्ति में प्रवाहित उसे प्रकाशित करे। अर्थात नमाज़ी एक दूसरे के द्वारा शक्ति प्राप्त करें। फ़रमाया- इस लोकतन्त्रीय एकता को पैदा करने तथा स्थापित रखने का शुभारम्भ इस प्रकार से अल्लाह तआला ने किया है कि प्रथम यह आदेश दिया है प्रत्येक मुहल्ले के लोग पाँच समय जमाअत के साथ नमाजों को मुहल्ले की मस्जिद में अदा करें ताकि नैतिकता का प्रवाह आपस में हो तथा प्रकाश सामूहिक होकर दुर्बलता का निवरण करे और आपस में परिचय होकर लगाव पैदा हो जाए। फ़रमाया कि परिचय बड़ी अच्छी चीज़ है क्यूँकि इसके द्वारा लगाव पैदा होता है जो कि एकता का आधार है। अतः जमाअत की नमाज़ों का जहाँ एक ओर व्यक्तिगत लाभ होता है इंसान को, वहीं दूसरी ओर एकता का लाभ भी होता है और जो नमाज़ों के लिए मस्जिद में नहीं आते अथवा कुछ ऐसे भी हैं कि आकर आपस में द्वेष को दूर करके लगाव और सम्बंध पैदा नहीं करते, उन्हें नमाज़ें फिर कोई लाभ नहीं देतीं क्यूँकि जो लक्ष्य है एक नमाज़ का, इबादत के अतिरिक्त एकता पैदा होना, परस्पर लगाव एंव मुहब्बत पैदा होना, वह प्राप्त नहीं होता।

अतः इस सोच के साथ मस्जिद में आना चाहिए ताकि हम एक होकर अल्लाह तआला के समक्ष स्वीकारीय नमाज़ें अदा करने वाले बनें तथा उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने वाले बनें।

नमाज़ों के नष्ट होने की घटना हज़रत मुस्लेह मौऊद, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि एक बार हज़रत मआविया की सुबह के समय आँख न खुली और खुली तो देखा कि नमाज़ का समय निकल गया है इस पर वे पूरे दिन रोते रहे। दूसरे दिन उन्होंने सपने में देखा कि एक आदमी नमाज़ के लिए उठाता है। उन्होंने पूछा तू कौन है? उसने कहा शैतान हूँ जो तुम्हें नमाज़ के लिए उठाने आया हूँ। उन्होंने ने कहा तुझे नमाज़ के लिए उठाने की क्या आवश्यकता है? उसने कहा कल जो मैंने तुम्हें सोते रहने प्रेरणा दी और तुम सोते रहे तथा नमाज़ न पढ़ सके, इस पर तुम पूरे दिन रोते रहे और चिंता करते रहे। ख़ुदा ने कहा कि इसे जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने से कई गुना अधिक सवाब दे दो। शैतान कहता है कि मुझे इस बात पर बड़ा दुःख हुआ कि नमाज़ से वंचित रखने पर तुम्हें अधिक पुण्य मिल गया। आज मैं इस लिए जगाने आया हूँ कि आज भी कहीं तुम अधिक सवाब न प्राप्त कर लो। तो आप फ़रमाते हैं कि शैतान तब पीछा छोड़ता है जबकि इंसान उसकी बात का तोड़ करता है इस लिए वह उससे निराश हो जाता है और चला जाता है। अतः हमें चाहिए कि हम भी प्रत्येक अवसर पर शैतान को निराश करें और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का हर सम्भव प्रयास करें तथा उसके आदेशानुसार चलने का प्रयास करें। अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करें तथा समय पर अदा करने का प्रयास किया करें।

कई बार कुछ लोग जल्दबाज़ी से काम लेते हुए किसी बात की गहराई में जाए बिना ही अपना विचार बना लेते हैं और फिर कुछ दुर्बल प्रकृति के लोग इस कारण से ठोकर भी खा जाते हैं। एक घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दावत में मैंने एक व्यक्ति को बाँए हाथ से पानी पीने से रोका। मैंने उसे कहा कि दाँए हाथ से पानी पियो, यदि कोई उचित कारण नहीं है तो। तो उसने कहा कि हज़रत साहब अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी बाँए हाथ से पानी पिया करते थे जबकि हज़रत साहब के ऐसा करने का एक कारण था और वह यह कि बचपन में आप गिर गए थे जिसके कारण हाथ में चोट आई थी तथा हाथ इतना कमज़ोर हो गया था कि इसके द्वारा गिलास तो उठा सकते थे परन्तु मुंह तक नहीं ले जा सकते थे परन्तु सुन्नत की पाबन्दी के लिए आप यद्यपि बाँए हाथ से गिलास उठाते थे परन्तु नीचे दाँए हाथ का सहारा भी दे लिया करते थे। अतः ये जल्दबाज़ियाँ ही हैं जो फिर अनुचित प्रकार के नए नए काम भी पैदा कर देती हैं अनुचित प्रकार की स्वयं ही तफ़सीरें करके इंसान स्वंय ग़लत परिणाम निकाल लेता है।

अल्लाह पर पूर्णतः विश्वास के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुने हुए एक वृत्तांत का वर्णन फ़रमाते हैं कि आप अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि सुलतान अब्दुल हमीद ख़ान की एक बात मुझे बड़ी पसन्द है। जब यूनान से युद्ध का सवाल उठा तो सुलतान अब्दुल हमीद ख़ान का सुझाव था कि युद्ध हो, परन्तु मंत्रियों की सलाह नहीं थी इस लिए उन्होंने बड़ी आपत्तियाँ प्रस्तुत कीं। अन्ततः उन्होंने कहा कि युद्ध के लिए यह चीज़ भी तय्यार है वह चीज़ भी तय्यार है परन्तु किसी महत्व पूर्ण चीज़ का वर्णन करके कह दिया कि अमुक बात का प्रबन्ध नहीं हो सका जो युद्ध के लिए आवश्यक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि जब मंत्रियों ने अपना सुझाव प्रस्तुत किया और जटिलताएँ बताईं और कहा कि अमुक वस्तु का प्रबन्ध नहीं तो सुलतान अब्दुल हमीद ने उत्तर दिया कि कोई कार्य तो ख़ुदा के लिए भी छोड़ना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद सुलतान अब्दुल हमीद के इस वाक्य है बड़ा आनन्द लेते थे और फ़रमाया करते थे कि मुझे उसकी यह बात बहुत पसन्द है तो मोमिन कि लिए अपने प्रयासों में से एक अंश ख़ुदा के लिए भी छोड़ना अनिवार्य होता है। सामान्यतः नौजवानों के मस्तिष्क में ये प्रश्न उठते रहते हैं कि प्रगति शील क़ौमें सम्भवतः ख़ुदा से दूर जाकर प्रगति कर रही हैं तथा मुसलमान मज़हब के कारण पतन का शिकार हो रहे हैं। जबकि वास्तव में मुसलमान अपने निकम्मेपन और अल्लाह पर निर्भरता के अनुचित विचार के कारण अपनी साख खो बैठे हैं तथा दुर्बलता का शिकार हो रहे हैं और जहाँ कुछ करते हैं वहाँ भी Approach(सोच) ग़लत है उनकी बिल्कुल। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम की आयत है कि और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ भी है और जो कुछ वादा किया जाता है वह भी है। फ़रमाया- उससे एक नादान धोखा खाता है और योजना के क्रम को बाधित कर देता है। मुसलमान समझते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया कि आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह मिलेगा इस लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं। अल्लाह तआला स्वयं ही सब कुछ भेज देगा।

फ़रमाया- जबकि सूरः जुम्अः में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम धरती पर फैल जाओ तथा ख़ुदा के फ़ज़्ल को तलाश करो और ख़ुदा का फ़ज़्ल यही है, तलाश करना कि परिश्रम करो और अपनी क्षमताओं को उपयोग में लाओ। फ़रमाया कि कुछ लोग ठोकर खाकर साधनों को ही सब कुछ समझ लेते हैं और कुछ लोग ख़ुदा के द्वारा वरदान किए हुए सामर्थ्य को व्यर्थ समझने लगते हैं। फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध पर जाते तो तय्यारी करते थे, घोड़े और हथ्यिार भी साथ लेते थे बल्कि आप कई बार दो दो कवच पहन कर जाते थे, तलवार भी कमर से लटका लेते थे। जबकि उधर ख़ुदा तआला ने वादा फ़रमाया था कि अल्लाह तुझे लोगों के आक्रमण से सुरक्षित रक्खेगा। अतः पूरी तय्यारी करके फिर निर्भर होने का आदेश है इसी प्रकार प्रत्येक कार्य में परिश्रम के साथ फिर पूरी तरह निर्भर रहने का आदेश है इसके बिना ख़ुदा तआला की सहायतता नहीं आती।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम ''बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूडेंगे'' की एक बड़ी सुन्दर व्याख्या हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फ़रमाई है। आप फ़रमाते हैं कि जब वह समय आएगा कि बादशाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कपड़ों से बरकत ढूढेंगे तो आपके सहाबा और ताबअीन और फिर तबा ताबअीन से भी उनके स्तर के अनुसार बरकत प्राप्त की जाएगी। अतः तुम अल्लाह से दुआएँ करते रहो कि शक्ति प्राप्त होने के बाद तुम कहीं अत्याचार न करने लगो। अतः तुम खुशी मनाने के साथ साथ इस्तिग़फ़ार भी करते रहो और अपने लिए भी, दूसरों के लिए भी दुआएँ करो (यह बड़ी आवश्यक चीज़ है कि आज हम अमन अमन की बातें करते हैं, सलामती की बातें करते हैं जब सब कुछ मिले, जब बादशाह अहमदी मुसलमान हों और बरकत प्राप्त करने का प्रयास करें उस समय हमारा जो है अमन और सलामती का पैग़ाम वह फैलना चाहिए, उस समय प्यार और मुहब्बत फैलनी चाहिए नहीं तो आजकल तो फिर मजबूरी की बातें होंगी) फ़रमाया कि वह दिन दूर नहीं जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इलहाम पूरा होगा लेकिन वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कपड़ों से उसी समय बरकत ढूंढेंगे जब तुम आप अलैहिस्सलाम की पुस्तकों से बरकत ढूंडने लग जाओ। आपने फ़रमाया कि जब तुम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों से बरकत ढूंडने लग जाओगे तो ख़ुदा तआला ऐसे सामान पैदा कर देगा जो कि आपके कपड़ों से बरकत ढूंडेंगे, तबलीग़ होगी, फैलेगी, बादशाहतें आएँगी तब वे कपड़ों से बरकत ढूंडने का भी प्रयास करेंगे (फिर हुज़ूर-ए-अनवर ने तबर्रुकात (निशानियों) को सुरक्षित रखने के विषय में मार्ग दर्शन फ़रमाया)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जिन पुस्तकों का वर्णन हुआ, इस बारे में कि किस प्रकार पुस्तकें प्रकाशित की जाती थीं, बयान करूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पुस्तक लिखने वालों के नख़रे सहन किया करते थे तथा लेखन का स्तर उत्तम रखने का प्रयास फ़रमाते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह पसन्द नहीं करते थे कि किसी अक्षम कातिब के द्वारा पुस्तक लिखवा कर ख़राब की जाए क्यूँकि इस प्रकार पुस्तक का स्तर लोगों की दृष्टि में तुच्छ हो जाता है। फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी पुस्तकों के प्रकाशन के विषय में एक विशेष शैली दिखाई देती है इसका पता चलता है कि ग़ैरों के सामने भी इस्लाम की प्रतिरक्षा तथा इसकी सुन्दरता के विषय में जो सम्भव प्रयास हो सकता है वह किया जाए तथा अपनों के ज्ञान में वृद्धि के लिए भी सुन्दर रूप में इस्लाम की शिक्षा सामने आए।

अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों को हमें विशेष रूप से पढ़ने का प्रयास करना चाहिए उनके द्वारा ही हमारा दीन का ज्ञान भी बढ़ेगा तथा हमें तबलीग़ करने का शौक़ भी पैदा होगा, हमारे ज्ञान में बरकत भी पड़ेगी और दुनया को हम इस्लाम के झंडे तले लाने के योग्य होंगे। अतः नौजवानों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए तभी बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंडेंगे इलहाम की वास्तविकता प्रकट हो सकेगी तथा इसकी हमें समझ भी आएगी और हम तबलीग़ के उत्तम स्तर पैदा कर सकेंगे। अल्लाह तआला इस बात को समझने की हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में तीन मरहूमों मुकर्रम चौधरी अब्दुल अज़ीज़ साहब डोगर, रबवा, मुकर्रमा इक़बाल नसीम अज़मत बट साहिबा पत्नि मुकर्रम ग़ुलाम सरवर बट साहब तथा मुकर्रमा सिद्दीक़ा साहिबा पत्नि मोहतरम क़ुरैशी मुहम्मद शफ़ी आबिद साहब दर्वेश मरहूम के शुभ लक्षणों एंव सेवाओं का वर्णन फ़रमाते हुए जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।